भजन

तर्ज–आजा सनम मधुर चांदनी में हम

कौन पारब्रह्म किसके दिल में है खसम
हुआ मिलन मगर न पहचान पाई आत्म
अब तलक हुआ न एतबार–2
ग्रन्थों की न गम न पहुंचे जिस तलक निगम
वहीं तो बीच मोमिनों के बैठे दे रहे हैं प्यार
वो हैं सदा सुख के दातार
1– मीठी मीठी प्यार की, जिनकी हर एक बात है
बेशुमार ल्याए शुमार में, क्या जिर्मी क्या मोहलात हैं
रूहों को जगा रहे चितवनी करा रहे
तारतम के ज्ञान से पार वो दिखा रहे
2– किसके नूर का ये जहूर है, क्या कभी किया कुछ सहूर है
कौन जाम अर्श के पिला रहे, किसकी मस्ती का ये सरूर है
किसके इश्क में हैं गर्क होने के लिए है
सबका दिल बड़ा मजबूर है कौन वो हजूर है
3– अलफ लाम मीम जो कुरान में,अब तो वो भी मुक्ता हरफ न रहे
बसरी मलकी हकी तीनों सूरतें,वाणी में ये खुद खुदा बता रहे
अब जो मद में चूर है,उसका ही कसूर है
खुद वो हक से दूर है,जिसको भी गरूर है